>

Title: Need to provide security to Kumari Mayawati.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : माननीय सभापति जी, मैं आपको बहुत धन्यवाद देता हूं कि आपने इस महत्वपूर्ण विषय को उठाने की मुझे इजाजत दी। सरकार का सं वैधानिक दायित्व है कि वह हर नागरिक की जान-माल और इज्जत की हिफाजन सुनिश्चित करे। खास तौर से ऐसे लोग जिनके ऊपर किसी संवैधानिक दायित्व को पकड़ने की जिम्मेदारी है या वह खास राजनीतिक मत रखते हैं या उनका कोई खास दृष्टिकोण है। उनको उत्पन्न होने वाले खतरों से बचाना सरकार की जिम्मेदारी है। पिछले लगभग दो-तीन महीने से बहुजन समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और इस सदन में बहुजन समाजवादी पार्टी के पार्लियामैंट ग्रुप की नेता सुश्री मायावती को धमकियां मिल रही हैं। इस संबंध में माननीय प्रधान मंत्री जी को, माननीय गृह मंत्री जी से हम न केवल मिले हैं बल्कि उन्हें पत्र भी लिखे हैं। सम्मानित अध्यक्ष महोदय को भी हमने पत्र दिया। ... (व्यवधान)मेरे बाद अगर वीरेन्द्र सिंह जी बोलें तो बहुत मेहरबानी होगी। ... (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र सिंह : सभापति जी, आरिफ साहब जिस चिन्ता को कह रहे हैं, सुश्री मायावती जी कल्याण सिंह वगैरह सबको धमिकयां देती है, उनको कौन धमकियां देगा?

श्री आरिफ मोहम्मद खां : इस तरह से बात नहीं होती। हमने सम्मानित अध्यक्ष महोदय को इस सिलसिले में ज्ञापन भी दिया। उन्होंने माननीय प्रधान मंत्री जी को पांच अगस्त को पत्र लिखा। माननीय गृह मंत्री को लिखा लेकिन आपको यह जानकार खेद होगा कि पांच अगस्त की एक्नॉलेजमैंट दस अगस्त को आई लेकिन उसके बाद इस सिलसिले में क्या कार्यवाही हुई, वह कुछ नहीं बताया। अभी लखनऊ में मायावती जी हैं। लखनऊ में कुछ घटनाएं हुई हैं । उन्होंने इसी महीने की दस तारीख को महामहिम राष्ट्रपति जी को पत्र लिखा। मैं उनके पत्र से यह उद्धरण दे रहा हूं। उन्होंने लिखा है। ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : पत्र का उद्धरण देने की जरूरत नहीं है। आपने जिक्र कर दिया, वही बहुत है।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : चूंकि बी.एस.पी. के विधायकों का एक मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है और उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष उनके साथ रंजिश मानते हैं, ऐसा मायावती जी ने पत्र में लिखा है। उन्होंने लिखा है कि मेरी जान को भारतीय जनता पार्टी, विश्व हिन्दू परिषद और बजरंग दल से खतरा है क्योंकि मैंने काशी, मथुरा और वाराणासी के मामले में उनके दबाव को मानने से इंकार कर दिया और किसी भी नयी परम्परा को

... (व्यवधान)

इसी के साथ

... (व्यवधान)

यह बाद में बोलें तो अच्छा होगा। मैं आपकी आज्ञा से बोल रहा हूं

... (व्यवधान)

मुझे पूरा कर लेने दीजिए।

सभापति महोदय : अब आप आसन ग्रहण करिये।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मेरा एक मामला और भी है। वह भी इतना ही महत्वपूर्ण है।

... (व्यवधान)

आप मेरे दूसरे नोटिस को देखिये।

... (व्यवधान)

मैंने लिखा है कि चेयरमैन माइनौरिटीज कॉमन डा. ताहिर मोहम्मद

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : दूसरा विषय नहीं चलेगा।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : यह सिक्योरिटी का मामला है।। आप नोटिस देख लें।

सभापति महोदय : सिर्फ एक ही विषय लिया जायेगा।

... (व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : आप नोटिस देख लें।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : अब आप मामले को डायलूट क्यों करना चाहते हैं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : सुश्री मायावती जी माननीय सदस्या हैं।

... (व्यवधान)

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : He has allowed me. (Interruptions)
SHRI E. AHAMED : Sir, I will require only one minute. I seek your kind permission. (Interruptions)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मुझे उन्होंने आज्ञा दी है, आप मालूम तो करिए, दोनों मामले उठाने की आज्ञा दी है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : ठीक है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : सुश्री मायावती जी के संबंध में आपका नोटिस था और आपने सवाल उठाया। सदस्यों की सुरक्षा का मामला जरूर गंभीर होता है और आप माननीय प्रधानमंत्री जी, माननीय गृह मंत्री जी और माननीय अध्यक्ष महोदय से भी गुहार कर चुके हैं। आसन से सरकार को कहा जाता है कि हर सदस्य की सुरक्षा का ख्याल तो रखना ही है लेकिन माननीय नेता सुश्री मायावती जी का ख्याल ज्यादा करना है और सुरक्षा का प्रबंध होना चाहिए।

... (व्यवधान)

श्री जी.एम. बनातवाला : शांति, मेरा भी नोटिस है, मुझे भी इस मामले में इजाजत दी जाए।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : मैं आपको मौका दूंगा, समय नष्ट न कीजिए।

... (व्यवधान)

SHRI E. AHAMED : The security cover given to the Chairman of the Minorities Commission, Dr. Tahir Mahmood has been withdrawn. (Interruptions)

सभापति महोदय : मैं सबको मौका दूंगा, कृपा करके आसन ग्रहण कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री जी.एम. बनातवाला : जल्दी मौका दीजिए।

... (व्यवधान)

यह जिंदगी और मौत का सवाल है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : मैं मौका दूंगा।

... (व्यवधान)